डॉ. अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज, आरा।

31.7.20

उपन्यास CC – IX

प्रश्न : रूपक और उपन्यास की व्याख्या करते हुए दोनों का अंतर स्पष्ट रूप से बतलाइए।

उत्तर : रूपक में आरोप होता है। अनुकर्ता पर अनुकार्य का आरोप। रंगमंच पर उपस्थित होने वाले पात्र को पहचानते हुए हम उसे हरिश्चंद्र या राम कहते हैं। क्योंकि वह रंगमंच पर अपनी वेष-भूषा में वह राम या हरिश्चंद्र बना होता है। रूपक में अभिनय के द्वारा प्राचीन, ऐतिहासिक या पौराणिक कथावस्तु का साक्षात एवं सजीव चित्र उपस्थित किया जाता है। उसमें अभिनय की प्रधानता होती है। कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, कथोपकथन, शैली सभी में अभिनय का दृष्टिकोण होता है। कथावस्तु का स्वरूप ऐसा होता है जिसका अभिनय हो सके। नायक तथा पात्रों के व्यक्तित्व की प्रधानता दिखाया जा सके। घटनाएँ पात्रों के जीवन के साथ संबंधित आती हैं। सारा नाटक संवादों के माध्यम से व्यक्त होता है। उसकी भाषा ऐसी होती है जिसमें अभिनय के तत्व समा सकें। स्थल-स्थल पर पात्रों के विचारधारा के अनुरूप स्वगत कथन और स्वगत भाषण कराने पड़ते हैं क्योंकि नाटककार तो कहीं भी प्रत्यक्ष आकर कुछ कह नहीं सकता। पात्रों के द्वारा ही सारे वस्तुस्थिति का ज्ञान होता है। नाटक में देशकाल चित्रण, वेष-भूषा आदि पर्दों के द्वारा उपस्थित किया जाता है। नाटक में अधिक से अधिक स्वाभाविकता आए उसका पुट भरा जाता है। नाटक को पाँचवा वेद भी कहा गया है। इसे भरतमुनि ने बनाया था। नाटक की भाषा में साहित्यिक उपकरण इकट्ठे करने की जरूरत नहीं है। उसमें तो जन-साधारण के लिए सुबोध भाषा की जरूरत होती है, जिसमें एक आदर्श और उद्देश्य होता है। यह जन साधारण में सुवृत्ति पैदा करने के लिए बनाया गया है। केवल मनोरंजन ही उसका लक्ष्य नहीं है बल्कि मनोरंजन के साथ समाज का भी लक्ष्य होता है।

उपन्यास भी नाटक की भाँति समग्र जीवन का चित्र उपस्थित करता है। पर उसमें विस्तार होता है। उपन्यासकार कथा आरंभ करके उसमें सहायक कथाओं को भी जोड़ता है, इससे कथावस्तु का कलेवर बढ़ जाता है। इसके कारण इसमें समग्र जीवन का समावेश हो जाता है। उपन्यास की कथावस्तु में घटनाओं की

P. T. O

प्रधानता होती है। यद्यपि पात्रों की सजीवता और चरित्र भी प्रधान होता है। उपन्यास आराम से पढ़ने की वस्तु है। उसमें कौतूहल की प्रधानता होती है। आगे क्या होगा, ऐसी भावना उसमें सर्वत्र रहती है। इसी को उपस्थित करने का लक्ष्य नाटककार को भी रखना पड़ता है। चरित्र चित्रण एवं, कथोपकथन व शैली सबमें यही भावना रहती है। मनोरंजन ही उपन्यास का प्रधान लक्ष्य है। यद्यपि उसके पीछे भी रचनात्मक उद्देश्य होता है।

नाटक और उपन्यास में मौलिक भेद है। नाटक कुछ घंटों के भीतर ही खेलने के लिए तैयार किया जाता है। उपन्यास में ऐसा कोई बंधन नहीं है। नाटक में वस्तु का संकोच होता है और उपन्यास में उसका विस्तार होता है। नाटक में सारे क्रिया-कलाप पात्र ही उपस्थित करते हैं। उनका कथोपकथन, स्वगत कथन आदि ही उनके आधार हैं। पर उपन्यास में स्वयं उपन्यासकार भी यह कार्य करता है। वर्णन देना, अभिनेयता की ओर उपन्यास को बढ़ाना आदि। नाटक में संकोच का नियंत्रण होता है। कथावस्तु एक ही होता है। प्रासंगिक कथा तो होती ही नहीं या बहुत छोटी होती है। अनेक प्रासंगिक वार्ताएं कथाएं सूक्ष्म रूप से कथोपकथन के द्वारा ही कह दी जाती हैं। पर उपन्यास में विस्तार ही सबकुछ है। उपन्यासकार कथा पर कथा जोड़ता है। नाटककार सबकुछ रंगमंच पर उपस्थित करने के लिए लिखता है और साथ ही उसके अभिप्रेत भी होता है कि इस दृश्य का बुरा असर दर्शकों पर न पड़े, इसलिए वह सभी प्रकार के दृश्यों को उपस्थित नहीं करता। जो दृश्य उन्हें दिखाने हैं, वही दृश्य वह प्रस्तुत करता है। नहीं तो उसकी सूचना कथोपकथनों में करा देता है। उपन्यास में जितने ही रोमांचकारी दृश्य होते हैं, उतना ही अच्छा है। अतः उसमें मृत्यु आदि के दृश्य सहायक होते हैं। मनोरंजन की दृष्टि से प्रेमालाप एवं श्रृंगार के दृश्य, हास्य का विकृत वर्णन होते हैं। किंतु नाटक में दृश्य परिवर्तन संगीत, हास्य और नृत्य होते हैं। उपन्यास में आश्चर्य जनक घटनाएं तथा कौतूहल वर्द्धक चित्रण अधिक होते हैं। नाटक में घटनाएं पात्रों के पीछे होती है उपन्यास में पात्र घटनाओं के पीछे होते हैं। नाटक में चरित्र-चित्रण सजीव होता है, उपन्यास में चरित्र-चित्रण सजीव तो होता है पर घटना क्रमों में उसकी प्रधानता लुप्त हो जाती है। नाटक का कथोपकथन सांकेतिक होता है, उसमें वाक्य पूरे-

P. T. O

नहीं होते, बीच-बीच में अभिनेयात्मक संकेतों के स्थान होते हैं। नाटक में देशकाल के लिए अलग विधान होता है। अतः नाटककार को इस बात का विशेष ध्यान रखना पड़ता है कि एक दृश्य के बाद ऐसा दृश्य रखा जाए जो रंगमंच बनाने वालों के लिए संभव हो। उपन्यास में उस प्रकार का दृश्य बंधन नहीं होता है। उसमें जितने आकस्मिक परिवर्तन हो सकते हैं, उसके लिए छूट है। उदाहरण के लिए, राज प्रसाद के दृश्य में रंगमंच की लम्बी व्यवस्था होती है। उसे हटाने और बनाने के दृश्य उपस्थित करने के लिए एक लम्बी व्यवस्था की जरूरत पड़ेगी। अतः नाटककार इन दोनों दृश्य के बीच कोई ऐसी व्यवस्था करेगा कि कोई ऐसा दृश्य न आए जिसके लिए लम्बी प्रतीक्षा करना पड़े।

इस प्रकार रूपक और उपन्यास में बड़ा अंतर है। रूपक एक छोटे अंतराल का प्रारूप है जिसकी कथा एकहरी होती है जबकि उपन्यास का फलक विस्तार लिए होता है, उसमें ऐसे कितने रूपक समा जाएगें। रूपक में कथा संक्षिप्त होता है जबकि उपन्यास के भीतर कथाओं के भीतर कई उप-कथाएँ होती हैं। नाटक अभिनय योग्य होने चाहिए जबकी उपन्यास के लिए ऐसी कोई मजबुरी नहीं है।

P.G. III semester
CC - IX

'Rupak aur Upnyas'